जीने की एक नई राह

मसीह को स्वीकार करने के अर्थ को समझना

जॉयस मेयर

 # 1 न्यूयोर्क टाइम्स–सर्वोत्तम विक्रेता लेखिका

जीने की
एक नई राह

जीने की एक नई राह

मसीह को स्वीकार करने के अर्थ को समझना

जॉयस मेयर

JOYCE MEYER
MINISTRIES®
Sharing Christ – Loving People

Post Bag No. 1, Jubilee Hills, Hyderabad - 500 033

If you purchase this book without a cover you should be aware that this book may have been stolen property and reported as "unsold and destroyed" to the publisher. In such case neither the author nor the publisher has received any payment for this "stripped book."

Unless otherwise indicated, all Scripture quotations are taken from THE AMPLIFIED BIBLE: Old Testament. Copyright © 1962, 1964 by Zondervan Publishing House (used by permission); THE KING JAMES VERSION; and from THE AMPLIFIED NEW TESTAMENT. Copyright© 1958 by the Lockman Foundation (used by permission).

The author would like to acknowledge that the story used in chapter 3, on pages 11-13 is on original sermon illustration by Dr. Monroe Parker and is used by permission of Gospel Projects Press,
P.O. Box 643, Milton, FL 32572: copyright 1977.
www.childrensbibleclub.com

Copyright © 2018 by Joyce Meyer Ministries - Asia

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, or stored in a database or retrieval system, without the prior written permission of Joyce Meyer Ministries - Asia.

Joyce Meyer Ministries - Asia
Post Bag No. 1, Jubilee Hills,
Hyderabad - 500 033

Phone: +91-40-2300 6777
Website: www.jmmindia.org

A New Way of Living - *Hindi*
Understanding What It Means to Accept Christ

Printed at:
Caxton Offset Pvt. Ltd.
Hyderabad - 500 004

विषय सूचि

1.	सबसे महत्वपूर्ण निर्णय जो आप लेंगे	1
2.	हम सबने पाप किया है	5
3.	ये समर्पण का समय है	11
4.	जीने की एक नई राह	16
5.	सोचने का नया तरीका	24
6.	बोलने का नया तरीका	31
7.	अपने आप को देखने का नया तरीका	36
8.	भय को विश्वास में बदलना	42
9.	जीवन का आनन्द लें	46
	उद्धार की प्रार्थना	51
	परामर्श के साधन	53

अध्याय 1

सबसे महत्वपूर्ण निर्णय जो आप लेंगे

क्या आप अपने जीवन से असन्तुष्ट है? यदि है तो आप अकेले नहीं हैं। लोगों की एक बड़ी भीड़ है जो थके हुए, चिन्तित, खाली और निरर्थक हैं। कुछ लोगों ने जैसा वे समझते/महसूस करते अपने समाधान के लिये धर्म का इस्तेमाल करने का प्रयत्न किया है, निर्जीव बोझों से और अनावश्यक नियमों को जिनका पालन वे नहीं कर सकें। यदि आपने धर्म का प्रयोग किया है, तो इसका अर्थ ये नहीं कि आपने अपने खाली, बेचैन, दोष मुक्त–जीवन के लिये परमेश्वर को इसके समाधान के लिये इस्तेमाल किया है।

यदि आपको प्रेम किये जाने को महसूस करने की आवश्यकता है, यदि आपको मित्र की आवश्यकता है, यदि आपके पापों की क्षमा की आवश्यकता है और यदि आपको भविष्य चाहिये...तो आपका उत्तर मसीह यीशु है। वह आपको नया जीवन और बिल्कुल नई सृष्टि बनाने को इंतज़ार कर रहा है।

यदि आप अपने जीवन से सन्तुष्ट नहीं हैं, तो आपको कुछ बदलना पड़ेगा। यदि हम वही कार्य करते रहें जो कर रहे थे तो वही जीवन रहेगा जो जीवन हमेशा था। आपको निर्णय करने की आवश्यकता है, और ये सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है जो आप लेंगे।

ये निर्णय आपके कॉलेज और पेशा चुनने, किससे विवाह करोगे, कैसे पैसों का निवेश करोगे और कहाँ रहोगे की अपेक्षा से अधिक महत्वपूर्ण है। ये निर्णय अनन्त से सम्बंधित है। अनन्त वह समय है जिसका अन्त नहीं है और हम में से हर एक को जानने की आवश्यकता है कि हम इसे कहाँ बितायेंगे। मृत्यु के बाद एक जीवन है, जब हम मरते हैं तो अपना अस्तित्व नहीं खो देते आपका अस्तित्व दूसरे स्थान में आरम्भ हो जाता है। ऐसा कहा गया है कि मरना एक घूमते हुए द्वार से होकर जाना है—आप एक स्थान को छोड़कर दूसरे में जाते हो।

क्या आप यहाँ इस धरती पर परमेश्वर के साथ सम्बन्ध रखना चाहते हो और उसके साथ अनन्त में रहना चाहते हो? यदि हाँ! तो आपको मसीह यीशु को उद्धारकर्ता करके ग्रहण करने की आवश्यकता है। हम सबने पाप किया है और हम सभों को उद्धारकर्ता की आवश्यकता है। परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को हमारे पापों के दन्ड को उठाने के लिये भेज दिया। उसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया और हमारे अपराधों के दाम चुकाने के लिये अपने निर्दोष लहू को बहाना पड़ा। वह मर गया और गाड़ा गया पर तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा और अभी स्वर्ग में परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठा है। वही आपकी शान्ति, आनन्द और परमेश्वर के साथ की सही सम्बन्ध की आशा है।

हमारे पापों से उद्धार पाने के लिये बाइबल ये सिखाती है कि हमें ये अंगीकार करना है कि मसीह यीशु ही प्रभु है और हमें अपने हृदयों में विश्वास करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया।

> यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। —रोमियों 10:9

इस प्रकार का विश्वास करना मानसिक स्वीकृति से अधिक है, ये ईमानदार और हृदय स्पर्शी है। बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि परमेश्वर है, पर उन्होंने अपने जीवन को उसे समर्पित नहीं किया है। परमेश्वर जीवन का प्रणेता है, और वह चाहता है कि आप अपनी इच्छा से, प्रसन्नतापूर्वक अपने जीवन को उसे वापस समर्पित कर दें। परमेश्वर ने आपको स्वतंत्र इच्छा में बनाया है और आपको वो मजबूर नहीं करेगा कि उसका चुनाव करें। चाहें आप करें या नहीं वह आपके जीवन की क्षमता पर फर्क लायेगा। तब आप इस धरती पर रह रहे हैं और ये निर्णय की बात है कि आप जब मरेंगे तो अनन्त में जीवन बितायेंगे।

क्या आप अपने जीवन को बिताते हुए कोई अच्छा काम किया है? यदि नहीं तो, क्यों न उसकी ओर मुड़ जायें जिसने सृष्टि की है और जो आपके विषय में अधिक जानता है आपके अपने से अधिक? यदि मैं एक गाड़ी खरीदूँ और आरम्भ ही से उसमें परेशानी होने लगे तो मैं उनके पास वापस ले जाऊँगा जिन्होंने इसका निर्माण किया है, जिससे कि वे इसे ठीक कर सकें। ऐसा ही सिद्धान्त परमेश्वर के साथ भी है। उसने आपकी सृष्टि की है और आप से अधिक प्रेम करता है। यदि आपका जीवन आपको सन्तुष्ट नहीं करता तो उसे परमेश्वर के पास ले जायें कि वह उसे सही करें।

जैसा मैंने पहले कहा, कुछ नहीं बदल सकता, जब तक आप निर्णय न लें। क्या आप एक मसीही होना चाहते हैं? क्या आप अपने आपको समर्पित करने को तैयार हैं, केवल अपने पापों को नहीं पर परमेश्वर को अपना पूर्ण जीवन भी समर्पित करें? क्या आप अपने पापमय राहों से मुड़ना चाहते हैं और सीखना चाहते हैं कि किस प्रकार बिल्कुल नया जीवन जियें जो परमेश्वर के लिये और उसके साथ है? यदि ऐसा है तो पवित्र वचन पढ़ते रहें क्योंकि आपके लिये एक जीवन इंतज़ार कर रहा

है जिसकी आप कल्पना कर सकते हो। ये सभी के लिये उपलब्ध है। किसी को छोड़ा नहीं जाता। यही तो परमेश्वर आपके भविष्य के लिये कहता है:

> क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा।
>
> —यिर्मयाह 29:11

कोई भी आपके लिये चुनाव नहीं कर सकता, ये केवल आपका ही है। किस प्रकार का जीवन आप चाहते हो? क्या आज जो हमारे समाज में दिखता उसके नमूने पर आप चलना चाहते हो? परमेश्वर का वचन कहता है कि हम इस संसार में कुछ लेकर नहीं आये हैं और वैसे ही चले जायेंगे (1 तीमुथियुस 6:7)। परमेश्वर अल्फा और ओमेगा है, आदि और अन्त। आदि में परमेश्वर था और अन्त में भी परमेश्वर रहेगा। हर एक व्यक्ति परमेश्वर के सामने खड़ा होगा और अपने जीवन का लेखा देगा (रोमियों 14:12)। अभी समय है कि उसके लिये तैयारी करें, मैं हमेशा कहती हूँ, “तैयार हो या नहीं,” “यीशु आ रहा है” अभी तैयार हो जाओ, अभी सही निर्णय लो क्योंकि बाद में फिर काफी देर हो जायेगी।

अध्याय 2

हम सबने पाप किया है

पाप जानबूझकर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना है, हम सबने पाप किया है, संसार में ऐसा कोई नहीं जिसने कभी पाप न किया हो (रोमियों 3:23, सभोपदेशक 7:20)। ये बुरा समाचार है पर शुभः समाचार भी है। हम सबको क्षमा मिलेगी और परमेश्वर के साथ सही होंगे।

> इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, (जो परमेश्वर देता/उंडेलता और पाता है।)
>
> परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत–मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।
>
> –रोमियों 3:23–24

यीशु ने पहले ही आपके पापों के लिये दाम चुका दिया है, आपको केवल उस पर विश्वास करना है और ग्रहण करना है। यदि आप अपने पापों को अंगीकार करोगे, तो उनके लिये दुःखी हों और उनसे पूरी तरह अलग हो जाने की इच्छा रखें, परमेश्वर आपको क्षमा करेगा और एक नया व्यक्ति बनायेगा।

> यदि हम (स्वतंत्रता से) ये इंकार/अंगीकार कर लें कि हमने पाप किया है तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है (अपनी प्रतिज्ञा व स्वाभाव में सत्य है) और हमारे पापों को क्षमा करेगा (हमारी अराजकता समाप्त करेगा) और (लगातार) हमें अधर्म से शुद्ध करता रहेगा (सब कुछ) –1 यूहन्ना 1:9

हमें परमेश्वर को कुछ करने के लिये इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं। जो करना था उसने पहले ही कर दिया है। उसने हमारे स्थान पर मरने के लिये अपने इकलौता पुत्र को दे दिया क्योंकि केवल सिद्ध और पापरहित बलिदान ही हमारे अधर्म का दाम चुका सकता है। न्याय संतुष्ट है और हम प्रभु यीशु पर विश्वास करके स्वतंत्र हो सकते हैं और उसके द्वारा परमेश्वर के साथ करीबी सम्बन्ध बना सकते हैं। हम अपने आप से परमेश्वर के पास नहीं जा सकते हैं–हमें एक वकील की आवश्यकता है। हमें बीच में किसी की आवश्यकता है और वो है मसीह यीशु। यीशु हमारे और परमेश्वर के बीच की खाई में खड़ा हुआ–जो हमारे पाप ने ये खाई खड़ी की और वह हमें परमेश्वर के पास लाता है।

जैसे एक बच्चे का पिता उसके अन्दर होता है (उसका खून, उसका डीएनए) इसलिये परमेश्वर मसीह में है –संसार का परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप कराते हुए। परमेश्वर लोगों से प्रेम करते हैं, जो उनकी सृष्टि है और वो उन्हें पाप के दासत्वता में नहीं देखना चाहते–बिना कोई मार्ग निकाले–और यीशु ही मार्ग है!

पाप श्राप लाता है

परमेश्वर का वचन कहता है हमें हमारा पाप खोज लेगा (गिनती 32:23), पाप श्राप लाता है और आज्ञाकारिता आशीष लाती है (व्यवस्थाविवरण 28)।

ये कुछ समय दिखाई दे कि व्यक्ति अपने पापों के साथ चल रहा है। उनका जीवन किसी दूसरे के समान अच्छा लगता है, पर अन्त में उनके चुनाव के परिणाम प्रगट होंगे।

जब हम परमेश्वर की आज्ञाकारिता के जीवन की अपेक्षा पाप का जीवन चुनते हैं तो हम अपनी आत्मा में दयनीयता का अनुभव करते हैं। मनुष्य एक मांस और हड्डी के शरीर से बढ़कर है। वह आत्मा है और उसके अन्दर प्राण है जो मन, इच्छा और भावनाओं से जुड़ा हुआ है। ये मनुष्य का व्यक्तित्व है। पापी अपने मन में पीड़ित होता है। वे मानसिक उत्तेजना से भरे होते हैं, और भले ही वो करें या रखें, कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उन्हें पूरी तरह सन्तुष्ट करें। वे भावनात्मक रूप से पीड़ित हैं—जबकि उन्होंने अपना जीवन स्वयं चलाने का निर्णय लिया है तो वे बेचैन और क्रोधित होते हैं (भावनात्मक रूप से बेचैन) जब चीज़ उनके अनुसार नहीं होती है। वे विश्वास के बारे में कुछ नहीं जानते। परमेश्वर पर विश्वास करना—एक शक्ति उनसे अधिक महान—जो उनके लिये अनजान है। वे अपनी आत्मा में कभी विश्राम नहीं पाते क्योंकि परमेश्वर के विश्राम में केवल उस पर विश्वास करके ही प्रवेश किया जा सकता है (इब्रानियों 4:3)।

हाँ, पाप का जीवन श्रापों से भरा हुआ है। उससे कोई अच्छाई नहीं निकलती यही तो परमेश्वर का वचन उसके बारे में कहता है जो व्यक्ति उसके बिना रहने का प्रयास करता उसको परिणाम के विषय में बताता है:

> मैं मनुष्यों को संकट में डालूँगा, और वे अन्धों के समान चलेंगे, क्योंकि उन्होंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है; उनका लहू धूलि के समान, और उनका मांस विष्ठा के समान फेंक दिया

> जाएगा"– "यहोवा के रोष के दिन में, न तो चाँदी से उनका बचाव होगा, और न सोने से, क्योंकि उसके जलन की आग से सारी पृथ्वी भस्म हो जाएगी, वह पृथ्वी के सारे रहनेवालों को घबराकर उसका अन्त कर डालेगा।"
>
> –सपन्याह 1:17–18

धर्मशास्त्र के ये वचन भयभीत करने वाले हैं पर ये मसीह यीशु पर विश्वास करने वाले के हृदय में भय उत्पन्न नहीं कर सकते। वे जो यीशु पर विश्वास करते हैं उन पर दण्ड की आज्ञा न होगी (यूहन्ना 3:18)।

दोष और दण्ड

दोष, पापी का लगातार साथी है–वह इसे अनदेखी करने के लिये बहुत सी चीज़ें करें पर अन्दर की गहराई में वह जानता है कि उसका जीवन सही नहीं है–यीशु ने कहा कि पापी दोष से बच नहीं सकता (यूहन्ना 9:41)।

बाइबल पुराने और नये नियम–दो भागों में विभाजित हैं, पुराना नियम ऐसा ही है, ये "पुराना" है यह पुरानी वाचा को प्रस्तुत करता है, एक जो परमेश्वर ने लोगों के पापों को ढांपने के लिये इस्तेमाल किया–जब तक कि यीशु के लिये नयी वाचा को स्थापित करने का समय न आया। जो पापों के लिये बलिदान की एक पद्यति के द्वारा होता है, लोगों के पाप ढांपे जाते थे पर कभी मिटाये नहीं जाते थे। दोष हमेशा बना रहता फिर भी नये नियम में नई वाचा के आधीन हमारे पास सिद्ध और अन्तिम बलिदान है जो पापों को ढांपना नहीं पर पूरी तौर से हटा देता है। यह न केवल पाप को धो देता है पर दोष भी इसके साथ चला जाता है।

कृपाकर नीचे दी गई धर्मशास्त्र की आयतों को पढ़ें और उस शक्ति पर मनन करें जो वो कह रहे हैं। वे सब इब्रानियों 10 से लिये गये हैं।

> उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं
>
> —इब्रानियों 10:10

> परन्तु यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।
>
> —इब्रानियों 10:12

> "प्रभु कहता है कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उनसे बाँधूँगा वह यह है कि मैं अपने नियमों को उनके हृदय पर लिखूँगा और मैं उनके विवेक में डालूँगा।"
>
> फिर वह यह कहता है, "मैं उनके पापों को और उनके अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूँगा।
>
> —इब्रानियों 10:16—17

> तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएँ।
>
> —इब्रानियों 10:22

ये पद हमें बहुत सी सुन्दर और महत्वपूर्ण बातों की सूचना देते हैं। पहला ये कि यीशु एक बार सदा के लिये बलिदान बन गया, और कोई बलिदान की आवश्यकता नहीं। पुरानी वाचा के आधीन बलिदानों को

बार बार चढ़ाना पड़ता था फिर भी दोष कभी हटाए नहीं गये। यीशु एक बलिदान बन गये जो पूरे समय के लिये अच्छा है और पाप और दोष को मिटाता है।

दोष को कानून की हैसियत से हटा दिया गया है पर एक को अभी भी सीखना है कि किस प्रकार दोष की भावनाओं से मुक्त होकर जियें। वास्तव में मसीह के लिये जो नया जीवन जिया जाता उसे ये सीखना है कि अपनी भावनाओं की दूसरी ओर जीना है। वे अब अपनी भावनाओं को और अधिक अपने ऊपर अधिकार जमाने नहीं देते। उन्हें परमेश्वर का वचन सुनना और उस पर पालन करना सीखना चाहिये—भले ही वे कुछ भी महसूस करें। इस प्रकार आज्ञाकारिता की जीवन शैली ऐसी आशीषें लाती है जिसका कोई मुकाबला नहीं।

अध्याय 3

ये समर्पण का समय है

या तो आपने मसीह यीशु को पहले ही ग्रहण कर लिया है और इस पुस्तक की मांग की है कि ये आपको मसीह के साथ नये जीवन जीने में सहायता करें, या आपको ये पुस्तक दे दी गई है और आशामय उस निर्णय को लेने को तैयार है।

यूहन्ना 3:16 कहता है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

मैं एक कहानी बताना चाहती हूँ जो इस पद की शक्ति को समझने में सहायता करेगी।

शिकागो शहर में एक ठन्ड़ी, अन्धेरी रात में, एक बर्फानी तूफान आया। एक छोटा लड़का कोने में समाचार पत्र बेच रहा था। लोग ठन्ड के मारे घरों के अन्दर थे और छोटा लड़का इतना अधिक ठन्ड में था कि वह अधिक अखबार नहीं बेच सकता था। वह एक पुलिस वाले के पास गया और कहा, "श्रीमान्, क्या आपको कोई गर्म जगह मालूम है जहाँ ये गरीब लड़का रात में सो सकता है? आप देखो कि मैं एक बक्से में सोता हूँ—उस कोने में। और ठन्ड बड़ी भयंकर है। रहने के लिये एक गर्म स्थान मिल जाये तो कितना अच्छा होगा।"

पुलिस वाले ने लड़के की ओर नीचे देखा और कहा, "ठीक है मैं बताऊँगा कि क्या करना है, तुम नीचे उस सफेद मकान पर चले जाओ और दरवाजा खटखटाओ। जब वे बाहर आयें तो उनसे यूहन्ना 3:16 कहना, वे तुम्हें अन्दर आने देंगे।"

तो लड़के ने वैसा ही किया वह उस मकान के दरवाजे तक गया और खटखटाया और एक महिला ने उत्तर दिया, उसने ऊपर देखा और "यूहन्ना 3:16" कहा।

उस महिला ने कहा, "अन्दर आ जाओ।"

महिला ने उसे अन्दर लिया और एक गर्म आग के सामने बैठा दिया। वह वहाँ कुछ देर बैठा रहा और अपने आप में सोचा—*यूहन्ना 3:16—मैं इसे नहीं समझता पर ये अवश्य एक ठन्डे लड़के को गर्म कर देता है।*

बाद में वह आई और उससे पूछी, "क्या तुम भूखे हो?"

उसने कहा, "हाँ, बस थोड़ा सा, मैंने कई दिनों से नहीं खाया है मैं सोचता हूँ कि मैं थोड़ा भोजन खा सकता हूँ।" वह महिला उसे किचिन में ले गई और टेबल पर बैठा दिया जहाँ बहुत सा भोजन रखा हुआ था, उसने खाया, खूब खाया—जब तक वह रूक नहीं गया तब उसने अपने आप सोचा, *यूहन्ना 3:16, मैं इसे तो नहीं समझता पर ये एक भूखे लड़के को भर देता है।*

वह उसे ऊपर एक बाथरूम में ले गई। जिसमें एक विशाल टब गर्म पानी से भरा हुआ था। वह वहाँ थोड़े समय उसमें बैठा रहा और अपने आप सोचने लगा, *यूहन्ना 3:16 मैं इसे समझता तो नहीं पर ये अवश्य एक गन्दे लड़के को साफ करता है।* महिला आई और उसे लेकर बढ़िया बिस्तर में गर्दन तक लपेटा और चुम्बन किया और कहा, "गुड़ नाइट"। उसने बत्तियाँ बुझा दी—जब वह अन्धकार में लेटा हुआ था उसने

खिड़की से बाहर देखा कि बर्फ नीचे धरती पर ठन्डी रात में गिर रही है उसने अपने आप सोचा, यूहन्ना 3:16—मैं इसे समझता तो नहीं पर अवश्य ये एक थके लड़के को विश्राम देता है।

दूसरे दिन फिर महिला उसे बड़े टेबिल जिस पर भोजन रखा था ले गई, जब उसने खा लिया तो उसे वही आग के सामने ले गई—उसने बाइबल ली और यूहन्ना 3:16 निकाल कर कहा क्या तुम यूहन्ना 3:16 समझते हो? "नहीं मैम नहीं!" मैंने पहली बार इसे जब पुलिस वाले ने कहा कि इसे इस्तेमाल करो—उस महिला ने उसे उसी आग के सामने लड़के को समझाती रही कि यीशु ही उद्धारकर्ता है आदि—उसने अपना हृदय और जीवन मसीह को दे दिया—वह बैठा और सोचा, *यूहन्ना 3:16 मैं इसे समझता तो नहीं पर अवश्य ही ये एक खोये लड़के को सुरक्षित महसूस कराता है*— (लेखक अनजान)

अभी, यदि आप अपने जीवन को परमेश्वर को समर्पण करने को तैयार हैं, मसीह यीशु को ग्रहण करके जिसने आपके पापों का दाम चुकाया है। तो मैं आपको मेरे साथ ये प्रार्थना करने को प्रोत्साहित करूँगी। शब्दों को दुहराओ और ज़ोर से कहकर सुनो कि वह सब आपके व्यक्तिगत रूप से कुछ अर्थ रखते हैं।

"पिता परमेश्वर, मैं आपसे प्रेम करता हूँ। आज मैं आपके पास विश्वास में आता हूँ—आपसे अपने पापों की क्षमा चाहता हूँ, यीशु मैं आप में विश्वास करता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि आप क्रूस पर मेरे लिये मर गये, आपने अपना निर्दोष लहू मेरे लिये बहाया। आपने मेरा स्थान और दण्ड ले लिया जो मुझे लेना था। मैं विश्वास करता हूँ कि आप मर गये, गाड़े गये और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठे। मृत्यु आपको रोक न सकी। आपने शैतान को परास्त किया और नरक की कुंजियाँ ले लीं और मृत्यु को उससे दूर किया।"

मैं विश्वास करता हूँ कि ये सब आपने मेरे लिये इसीलिये किया कि आप मुझ से प्रेम करते हैं। मैं एक मसीही होना चाहता हूँ। मैं अपने जीवन भर आपकी सेवा करना चाहता हूँ। मैं सीखना चाहता हूँ कि जो नया जीवन आपने दिया है उसे कैसे जिऊँ। मैं हे यीशु आपको स्वीकार करता हूँ और अपने आप को आपको देता हूँ। मैं जैसा हूँ वैसा ही ले लीजिये–और जो चाहते हैं मुझे बनाइये।

यीशु, मेरा उद्धार करने के लिये आपका धन्यवाद। मुझे अपने पवित्र आत्मा से भर और जो मुझे जानना है सिखा। अब मैं विश्वास करता हूँ कि मेरा उद्धार हो गया है, मेरा नया जन्म हुआ है और जब मैं मरूँगा तो स्वर्ग जाऊँगा, पिता परमेश्वर मैं अपनी यात्रा का आनन्द लूँगा और आपकी महिमा के लिये जीऊँगा!

यदि इस प्रार्थना को संजीदगी से आपने किया है–तो आपने अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। आप जैसा भी महसूस करते हो परमेश्वर ने आपकी प्रार्थना सुना और उसका उत्तर दिया है। आप शान्ति या आनन्द या राहत या स्वतंत्रता महसूस करें आप अभी कुछ भी महसूस ना करें। अपनी भावनाओं को अपना निर्देशक न बनने दें, परमेश्वर के वचन पर विश्वास करें क्योंकि वह विश्वास योग्य है और अपने वायदे जो उसने कहे उसमें सच्चा है:

> जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा।
>
> –यूहन्ना 6:37

परमेश्वर ने आपके साथ सदा रहने का वायदा किया है, संसार के अन्त तक। आप उसे शायद महसूस ना करें–पर वह सब जगह है–हर

समय उसकी आँखें निरन्तर आप पर लगी रहती हैं और वो देखती रहेंगी। वह उन सब चीज़ों के प्रति जो आप से सम्बन्धित हैं चिन्ता करता और उन्हें सिद्ध करने का वायदा करता है। उसने आप में एक अच्छा काम करना आरम्भ कर दिया है और वह आपमें समाप्त कर पूरा करेगा (उत्पत्ति 28:15; भजन संहिता 138:8; फिलिप्पियों 1:6)।

आपको बधाई हो, आपके पास एक उत्तम मित्र–यीशु है–सबसे उत्तम मित्र जो आप कभी पाओगे। आप उससे सब कुछ बात कर सकते हो क्योंकि वह आपको हमेशा समझता है (इब्रानियों 4:15)। वह आपको कभी तिरस्कृत नहीं करता। परमेश्वर के लिये कुछ चीज़ बड़ी नहीं है ना बहुत छोटी है। वह चाहता है कि आप अपने सब मार्गों में उसे स्वीकार करें और अपने जीवन के हर क्षेत्र में आमंत्रित करें।

आप एक नई सृष्टि बन गये हैं, पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो वे सब नई हो गई हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। आप बिल्कुल एक नया आरम्भ पाते हैं।

आप गलतियाँ करोगे–हम सब करते हैं–आपको बहुत बातें सीखनी हैं और यात्रा आरम्भ कर दी है जो जीवन भर की है। हमेशा ये याद रखें कि जब आप गलती करो तो मांगने पर परमेश्वर की क्षमा और स्वच्छता उपलब्ध हैं। कोई भी पाप हो तो तुरन्त पश्चाताप करो और परमेश्वर से कभी कुछ ना छिपायें क्योंकि वह सब चीज़ें जानता है।

परमेश्वर आपसे बहुत प्रेम करता है–वह हर समय आप से प्रेम करता है। वह जब अच्छा या बुरा करते तो आपसे अधिक प्रेम नहीं करता पर वह आपसे सामान्य प्रेम करता है!

अब समय है कि जीवन की नई राह के बारे में सिखायें।

अध्याय 4

जीने की एक नई राह

जैसे ही आप अपने नये जीवन में प्रवेश करते हो जिसे परमेश्वर के साथ और उसके लिये जीना है। आप पाओगे कि उसके बहुत से सिद्धान्त संसार के तरीकों में ऊपर नीचे लगते हैं। वास्तव में ये संसार है जो ऊपर नीचे (उल्टा) है – परमेश्वर का राज्य तो सीधा ऊपर है। हम परमेश्वर के तरीकों से कार्य करने के आदि नहीं हैं और पहले वे कठिन मालूम पड़ते या समझने में मुश्किल लगते।

बपतिस्मा

यीशु में नये विश्वासी होकर आपको प्रथम कार्य ये करना है कि पानी का बपतिस्मा लें बपतिस्मा आपके मसीह के पीछे चलने का आन्तरिक निर्णय है जो बाहरी रूप से प्रगटीकरण है। जब व्यक्ति बपतिस्में में पानी के नीचे जाता है वह पुराने जीवन को दफन करना होता है और जब पानी से बाहर आते हैं वह नये जीवन का पुनरुत्थान को प्रगट करता है। ये वह कुछ है जो हम परमेश्वर की आज्ञाकारिता में करते हैं।

> बपतिस्मा जो एक निशान है {उनके छुटकारे का} जो आपका उद्धार नहीं करता {अन्दर के प्रश्नों और भय से} शरीर का

बाहरी गन्दगी मिटाने के द्वारा {स्थान करना} पर {आपको ये देकर} एक अच्छे और शुद्ध विवेक के उत्तर में (अन्दर की सफाई और शान्ति) परमेश्वर के सामने (क्योंकि आप प्रगट कर रहे हैं जो आप स्वयं विश्वास करते हो) मसीह यीशु के जी उठने के द्वारा। —1 पतरस 3:21

पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, (अपना दृष्टिकोण, और अभिप्राय बदलो, अपने अन्दर परमेश्वर की इच्छा स्वीकार करने के लिये ना कि तिरस्कार करने के लिये) और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

—प्रेरित 2:38

कलीसिया में जाना

दूसरी बात जिसकी मैं ज़ोर से सिफारिश करती हूँ वह ये है कि स्थानीय कलीसिया में भाग लें। कलीसिया में जाना किसी को मसीही नहीं बनाता। केवल चर्च जाने से हम मसीही नहीं बन जाते पर यदि हम मसीही हैं और परमेश्वर की आराधना करना चाहते हैं साथ ही दूसरे विश्वासियों के साथ संगति करना चाहते हैं। कलीसिया वह स्थान है जहाँ हम परमेश्वर का वचन सीखते हैं।

सभी कलीसिया अच्छे कलीसिया नहीं हैं। कुछ धार्मिक दिखने वाले जो बाहर से प्रतीत होते हैं, पर अन्दर कुछ नहीं हो रहा है जो किसी की सहायता कर सके। यदि आप कलीसिया में जाते हैं जो आपको परमेश्वर के वचन नहीं खिलाता और न आपको ये चुनौती देता कि प्रतिदिन परमेश्वर के साथ बढ़ना है, तो खोज़ते रहो जब तक कि पा

सको। कलीसियाएँ डॉक्टरों की तरह—सभी अच्छे नहीं हैं पर वे सब बुरे भी नहीं है। आपको बस पता करना है वो जो आपके लिये सही हो। कुछ लोग बड़ी कलीसिया पसन्द करते कुछ छोटी। कोई एक वर्ग को दूसरे से बेहतर समझता जिसका मतलब है कि वे बड़ी संस्था के नहीं हैं। मुख्य बात ये है कि यदि आपका ठोस समर्पण है तो ये आपकी सहायता करेगा। ये आपको मित्र बनाने का अवसर देता है जो एक ही विचार के होते हैं—एक ही विश्वास, और नैतिक आधार पर मिलते जुलते हैं, ये आपको संसार की परीक्षाओं से अलग रखता है।

निश्चय करें कि आप ऐसी कलीसिया में जाते हैं जहाँ आप महसूस करते कि यहां मसीहत में आप बढ़ रहे हैं। नये विश्वासियों के लिये ये बहुत ही महत्वपूर्ण है कि बहुत सी बातें सीखें। यदि वह नहीं सीखता और तरक्की नहीं करता तो वह पिछड़ने के खतरे में है या वापस पुराने रास्ते पर चल रहा है।

नये विश्वासियों के लिये छोटा झुण्ड जो बाइबल अध्ययन करता बहुत फायदेमन्द है। इसमें आपको सीखने का अवसर मिलेगा प्रश्न पूछने, प्रार्थनाओं को प्राप्त करने व दूसरों के लिये करने का अवसर होगा। आशा है आपका कलीसिया बड़े लोगों के बाइबल अध्ययन का अवसर देगा जिसमें आप शामिल हो सको। कलीसिया केवल ये स्थान नहीं जहाँ सिर्फ प्रचार का कार्य होता है पर ये वो स्थान है जहाँ हम सेवकाई के बारे में मसीह की देह में (कलीसिया) बयान भी कर सकते हैं। दूसरों से लेने की अपेक्षा हमें देने की भी आवश्यकता है।

समर्पण

समर्पित होना बहुत महत्वपूर्ण है। ये वो नहीं जो एक बार हमने गलत किया और उससे हमारा जीवन ऐसे उलझन में फंस गया पर ये वो

गलतियाँ हैं जो हम लगातार करते रहे हैं। और कुछ अच्छा एक या दो बार करते रहे हैं यह हमें उस नये जीवन में जिसे हमें परमेश्वर ने दिया है, जीने में सहायता मिलेगी। हमें धीरज धरना है और जो जानते वो करना है भले ही करने की इच्छा न हो। हमें लगातार करते रहना है–परमेश्वर ने आपको संयम और अनुशासन की आत्मा दी है (2 तीमुथियुस 1:7)। आपको केवल उसका अभ्यास करना है।

परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिये समर्पित हो। उसके वचन का अध्ययन करो–ऐसी पुस्तकें पढ़ो जो बाइबल को समझने में सहायक हों। शिक्षण के टेप सुनो, सी.डी. सुनो, अच्छे मसीही कार्यक्रम टी.वी. पर देखो। प्रार्थना के लिये समय निकालो, प्रार्थना करना सीखो–स्मरण करें कि परमेश्वर सब चीज़ों में रूचि लेता है, जो आपसे सम्बन्धित हैं–प्रार्थना परमेश्वर से वार्तालाप करना है। जैसे आप मसीहत में बढ़ते हैं तो आप केवल ये नहीं सीखोगे कि किस प्रकार परमेश्वर से बातें करना है पर उससे कैसे सुनना है और ये आपके उसके साथ चलने में एक नया रूप बना देगा।

दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र जो समर्पण का है "देना"। परमेश्वर ने हमें बहुत कुछ दिया है और ये स्वाभाविक है कि उसे कुछ दें और पृथ्वी पर उसके लिये कुछ काम करें। जब आपकी सहायता की गई है, तो ये स्वाभाविक है कि आप दूसरों की सहायता करें, और एक तरीका जिससे आप कर सकते वो है कि समर्पणता के साथ अपने चर्च को दें और दूसरी सेवकाइयों को जिन्होंने आपकी सहायता की उन्हें दें। हर चीज़ जो हम परमेश्वर को देते तो वह कई गुणा वापस दे देता है–उसका वचन कहता है कि जो हम बोते हैं वही हम काटेंगे।

मसीह को ग्रहण करने से पहले और उसमें नई सृष्टि बन जाने से पहले हमें देने में कोई गम्भीर दिलचस्पी नहीं थी। हम स्वार्थी थे और

चाहते थे कि दूसरे हमें दें—पर जब हम मसीह के प्रेम में गहराई से चले जाते है तो हमारे हृदय बदल जाते हैं।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाना

बपतिस्में का मतलब है पूरी तौर से डूब जाना। कोई भी चीज़ जो डूबी हुई है वह भरी हुई है, यदि उसमें कोई खुलापन हो तो। यदि आप खुले हुए हैं तो आप पूरी तरह से पवित्र आत्मा से भर जाओगे। जिस समय आप प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता कर स्वीकार करते तो पवित्र आत्मा पाते हो पर यदि आपके हृदय के हर कमरे खुले हों तो और तैयार हों तब ही वह पूरी तरह से भर सकेगा।

आपके पास पवित्र आत्मा है पर आप निश्चित होना चाहते हैं कि वह आप सब में हैं। परमेश्वर आपको अपनी सेवा में इस्तेमाल करना चाहता है और आपको उसके आत्मा की सामर्थ की आवश्यकता है सफल और उत्पादित होने में है।

परमेश्वर हमें दैवीय वरदान भी देता है (दैवीय शक्ति का प्राप्त करना) जिससे हम अपने प्रतिदिन के जीवन में वह सहायता कर सके। वरदान बहुत प्रकार के हैं और हर कोई उन्हें पाता है, पर कुछ एक से अधिक बेहतर हैं। मेरा वरदान सिखाने का है दूसरे संगीत में, प्रबन्ध में, दया के कार्यों में या सहायता करने में। 1 कुरिन्थियों 12:7—10 में 9 प्रकार के वरदानों का बयान है जिसके बारे में हमें मालूम होना चाहिये, हमें वास्तव में सिखाया गया है कि इन वरदानों के लिये गम्भीरता से इच्छा करें। वे ज्ञान के शब्द हैं, बुद्धि के और विश्वास के शब्द हैं, चंगाई की सामर्थ, आश्चर्यकर्म करने के, भविष्यवाणी करने (परमेश्वर के अभिप्राय और दैवीय इच्छा के अनुवाद करने हेतु) भली व दुष्ट आत्माओं के बीच फर्क

करने की, अन्य भाषा बोलने का वरदान और उनका अनुवाद करने का वरदान।

भले ही आप इन वरदानों को न समझो मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि परमेश्वर से ये वरदान मांगें और उनको इस्तेमाल करना सिखायें। हम बहुत सी घटनाएँ देखते जहाँ परमेश्वर के लोग अन्य भाषा बोलते हैं (एक आत्मिक भाषा)। जब हम अन्य भाषा में प्रार्थना करते तो हम परमेश्वर से रहस्य और गुप्त बातें परमेश्वर से बोल रहे हैं और हम अपने आपको बढ़ाते व तरक्की करते हैं। पौलुस प्रेरित ने कहा, वह चाहता है कि हर एक अन्य भाषा बोले (1 कुरिन्थियों 14:2,4–5)।

अन्य भाषा बोलने का वरदान, विशेषरूप से बहुत वर्षों से मसीहियों में विभाजन लाने का कारण हुआ है। कुछ मानते हैं कि ये वरदान आज के लिये है जबकि दूसरे इसे नहीं मानते। मैंने व्यक्तिगत रूप से अपने जीवन में इन वरदानों का अनुभव किया है और करीब 30 वर्षों से अन्य भाषा में बोली हूँ और इसलिये जानती हूँ कि ये आज के मसीहियों के लिये उचित है। हमें हर चीज़ जो सहायता करें उसकी आवश्यकता है।

बहुधा लोग जिन्होंने अनुभव नहीं किया उसका तिरस्कार करते हैं या वे जो इसे नहीं समझते हैं। ये एक गलती है। हमें बाइबल पढ़ना चाहिये और जो वह कहती है विश्वास करना चाहिये।

मैं आपको चुनौती देती हूँ कि पवित्र आत्मा पर ध्यान दें उसके वरदानों पर नहीं। वरदान आयेंगे। कुछ लोग अन्य भाषा से बहुत कुछ अधिक बनाते हैं। जब हम जूते का जोड़ा खरीदने जाते हैं तो स्टोर में जाकर जीभ के जोड़े नहीं मांगते हैं। हम केवल जूते मांगते हैं तो जीभ उसके साथ आती है। ऐसा ही पवित्र आत्मा के साथ है। प्रतिदिन अपने जीवन में उसकी अधिक उपस्थिति को मांगें और भाषा व दूसरे वरदान अपने समय पर आ जायेंगे।

परमेश्वर के इनाम नहीं उसकी उपस्थिति की खोज़ करो

परमेश्वर आपके लिये अच्छी चीज़ें करना चहता है, वह आपको बहुत सी आशीषें देना चाहता है, पर ये महत्वपूर्ण है कि आप उसकी खोज करें कि वह कौन है और ये नहीं कि वह क्या कर सकता है। परमेश्वर तुलना में लाजवाब है और उसकी उपस्थिति में रहना अद्‌भुत है। जब आप उसके चेहरे को खोजते हैं आप पाओगे कि उसके हाथ हमेशा खुले हैं–पर यदि आप केवल हाथों को खोजें तो ये उसकी निन्दा है। कोई नहीं, ना परमेश्वर चाहता कि वह किसी के व्यक्तिगत लाभ के लिये इस्तेमाल किया जाये।

आप जो भी चाहते हैं परमेश्वर से मांगें और यदि यह आपके लिये उत्तम है तो उसके समय में वह आपको देगा। पर हमेशा याद रखें कि किसी भी चीज़ से अधिक आपको अपने जीवन में उसकी आवश्यकता है। उसकी अधिक उपस्थिति, उसके मार्ग, उसका चरित्र, उसकी बुद्धि, उसकी समझ और उसकी सामर्थ आदि।

परमेश्वर सब कुछ है और हम उसके बिना व्यर्थ हैं यीशु ने कहा, "बिना मेरे तुम कुछ नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5)।

> क्योंकि उस की ओर से और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है। उसकी महिमा युगानुयुग होती रहेः आमीन
>
> –रोमियों 11:36

बहुत कुछ सीखना है

इस छोटी पुस्तक में आपको मेरे साथ बांटने के लिये बहुत कुछ सीखना

है। आपको धार्मिक सिद्धान्त सीखना है, जिस विश्वास पर आधारित हैं और मसीहत की शिक्षा की नींव के विषय। अधिकतर कलीसियाओं में नये विश्वासियों के लिये शिक्षण कक्षा लगाई जाती है। मैं जोरदारी से सिफारिश करती हूँ कि आप उनमें जायें। आप सीखेंगे कि यीशु का जन्म कुंवारी से हुआ था। मैं जानती हूँ कि ये असम्भव लगता है, पर ये सत्य है और आपके लिये इसे समझना महत्वपूर्ण है क्यों। आप सीखोगे कि आर्थिक रूप से परमेश्वर को देना महत्वपूर्ण है जिससे सुसमाचार दूसरों को प्रचार किया जा सकता है जो अभी तक उसको नहीं जानते हैं। आप त्रिएकता के बारे में सीखेंगे, एक ईश्वर की सेवा की सच्चाई जो तीन व्यक्तियों में प्रगट होता हैः पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। आप स्वर्गदूतों की सेवकाई के विषय में सीखेंगे, यीशु के लहू के महत्व के विषय, परमेश्वर से कैसे सुनना, धार्मिकता, मनफिराव की शिक्षा और बहुत सी और और चीज़ें।

यद्यपि मैं इस पुस्तक में सब कुछ नहीं बाँट सकती, पर कुछ है जो मैं बाँटना चाहती हूँ जो मेरा मानना है कि जो आपके नये जीवन में महत्वपूर्ण है, तो आइये आगे बढ़ें...

अध्याय 5

सोचने का नया तरीका

पूर्णरूप से नये तरीके से सोचना–सीखना बहुत महत्वपूर्ण है। परमेश्वर के पास आपके और आपके जीवन के लिये अच्छी योजना है पर आपको उसके साथ सहमत होना पड़ेगा। शैतान के पास आपके लिये वा आपके जीवन के लिये योजना होती है और ये अच्छी नहीं है। चोर (शैतान) केवल चोरी करने और घात करने को आता है (यूहन्ना 10:10) शैतान हर प्रकार के गलत विचार हमारे अन्दर डालता है ये आशा करके कि हम विश्वास करेंगे और उससे सहमत होंगे। ये इस प्रकार है कि वह लोगों को धोखा देता है और उनके जीवन में प्रवेश ढूँढ़ता है।

> इस संसार के सदृश न बनो (इस युग में) {बाहरी रूप को स्वीकार कर बाद में उसे ले लिया, ऊपरी रिवाज़ों को बना लिया}; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से (उसके नए विचारों और रवैये से) तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो {आपके लिये उसकी दृष्टि में}।
>
> –रोमियों 12:2

उपरोक्त धर्मशास्त्र हमें स्पष्टरूप से बताता है कि हमारे जीवन उस समय तक नहीं बदल सकते जब तक हमारी सोच न बदल जाये। यदि आप नया जीवन चाहते हैं तो आपको सोचने का नया तरीका होगा। परमेश्वर के पास हम सब के लिये अच्छी योजना है पर ये उस समय पूरी होगी जब हम सही सोचने के महत्व को सीख लें।

आप अपने विचारों को नियंत्रित कर सकते हैं

शायद आप उस तरह हैं जैसे मैं एक बार थी और सोचती कि आप कुछ नहीं कर सकते उसके विषय में जो आप सोचते हैं। वह सही नहीं है। आप चुन सकते हैं कि आप सोचोगे या नहीं और इसे बड़ी सावधानी से करना चाहिये। जहाँ दिमाग़ जाता है वहीं मनुष्य पीछे जाता है। हम सब को ये अनुभव है कि कुछ खाने के लिये सोचें–शायद आइसक्रीम, एक डोनट, या कुछ और ललचानेवाला भोजन। जितना अधिक हम उसके बारे में सोचते हैं उतना ही दृढ़ निश्चय हम करते। यदि काफी अरसे तक हम सोचते रहें तो कार में प्रवेश कर जायेंगे या कई मील तक चलायेंगे–बाद में अफसोस होता कि हमने वह खाया और उसे पाने के लिये समय और पैसा बर्बाद किया।

यदि किसी ने हमारे साथ गलत किया है और उस पर बार बार सोचते जिससे हमें चोट पहुँची तो हम महसूस कर सकते हैं कि हम गुस्सा हो रहे और भावनात्मक रूप से विचलित हो रहे हैं। हमारे विचार हमारी भावनाओं को प्रभावित करते हैं और शब्द बन जाते जो हम बोलते हैं।

अगली बार जब आप अपने को विचलित पायें या मानसिक दबाव में हों तो ज़रा अपने आप से पूछें कि आप क्या सोच रहे हैं और आप पाओगे कि आपके विचार और भावना के बीच क्या सम्बन्ध हैं।

दिमाग़ युद्ध का मैदान है जहाँ हम शैतान से युद्ध लड़ते हैं। 2 कुरिन्थियों 10:4–5 हमें सिखाता है कि हमें गलत विचार और कल्पनाओं को निकाल देना चाहिये और उन्हें यीशु के पास लाना चाहिये। इसका मतलब ये है कि हमें परमेश्वर के वचन के अनुसार सोचना चाहिये। जो कुछ भी जो यीशु की शिक्षा से मेल नहीं खाता उसे अपने दिमाग़ से बाहर रखना चाहिये और शैतान का झूठ जानकर तिरस्कार करना चाहिये। यदि आपका शत्रु (शैतान) आपके दिमाग़ को नियंत्रित कर सकता है तो वह आपके जीवन और मंज़िल को नियंत्रित कर सकता है।

उदाहरण के लिये, यदि आपने आत्म–हत्या के बारे में सोचा है तो ये परमेश्वर आपके दिमाग़ में नहीं डाल रहा। वह तो चाहता है कि आप जियो और अपने जीवन का आनन्द लो। यदि आपने ये सोचा कि आप अच्छे नहीं हो या कोई आपसे प्रेम नहीं करता, तो ये विचार परमेश्वर से नहीं आ रहे क्योंकि वे परमेश्वर के वचन से सहमत नहीं हैं।

नकारात्मक सोच

किसी भी प्रकार के नकारात्मक सोच के विषय में सावधान रहो। परमेश्वर के प्रति कुछ भी नकारात्मक नहीं हैं या आपके जीवन के लिये उसकी योजना। ग्लास को आधा खाली देखने की अपेक्षा आधा भरा हुआ देखें। सकारात्मक होना किसी को भी चोट नहीं पहुँचाता।

आपका जीवन जैसा भी रहा हो फर्क नहीं पड़ता आपको अपने भविष्य के लिये सकारात्मक दर्शन होना चाहिये। परमेश्वर के साथ

सहमत हो और विश्वास करो कि अच्छी चीज़ें होने वाली हैं। यदि आप नकारात्मक व्यक्ति रहे हैं जैसा मैं एक बार थी। सकारात्मक सोचने के लिये कुछ अभ्यास की आवश्यकता है। मेरा पालन पोषण बहुत ही नकारात्मक वातावरण में हुआ और हमेशा परेशानी की आशंका थी पर तब मैंने सीखी कि हमारी परेशानियाँ हमारे नकारात्मक सोच से आ सकती हैं।

> दुखियारे के सब दिन दुःख भरे रहते हैं, परन्तु जिसका मन प्रसन्न रहता है, वह मानो नित्य भोज में जाता है।
>
> —नीतिवचन 15:15

पहले जब पवित्र आत्मा ने मुझे इसे धर्मशास्त्र की ओर अगुवाई की, मुझे मालूम नहीं था कि "पूर्वाभास" क्या है पर मैंने सीखा कि वे नकारात्मक और डरावने विचार हैं जो कुछ बुरा होने वाला था। मुझे भी ये मानना था कि मैं वही पा रही थी जो मैं अधिकतर आशा कर रही थी, जो एक परेशानी थी। मैं चाहती थी कि मेरा जीवन बदल जाये और नहीं समझी कि क्यों परमेश्वर नहीं बदल रहा था, पर अन्त में, मैंने ये एहसास किया कि मुझे अपनी सोच को बदलना है इससे पहले कि वह मेरे जीवन को बदले।

किसी भी चीज़ के लिये नकारात्मक न रहें—अपने भविष्य के लिये नहीं या आपका पिछला समय। आपका पूर्व का समय परमेश्वर के पूरी योजना के अनुसार कार्य कर सकता है पर यदि आप परमेश्वर पर भरोसा करो तो। सब गलतियाँ जो आपने की वे आपको बेहतर बना सकती हैं और बुद्धिमान व्यक्ति बना सकते हैं। आप उनसे सीख सकते हैं और निर्णय कर सकते हैं कि फिर ऐसी गलती कभी नहीं करेंगे। अपने आर्थिक मामलों के प्रति, मित्रों, परिवार के प्रति नकारात्मक न हों। किस

प्रकार की कार आप चलाते हो या कुछ और। सकारात्मक रवैया विकसित करो तो वह आपको सकारात्मक और शक्तिशाली जीवन बनाने में सहायक होगा।

चिन्ता न करो या उत्साहित हो

चिन्ता और उत्सुकता सोचने के दो रूप हैं जो बुरे हैं। चिन्ता कुछ अच्छा नहीं करती, पर अधिक हानि कर सकती है। चिन्ता को परमेश्वर पर भरोसा करने से बदल दो वह सब समस्याओं का समाधान करेगा। चिन्ता के मारे आप अपनी उम्र से बड़े दिखते हो, वह सिर दर्द देता और पेट की समस्या होती है इससे आप लोगों से कठोर व्यवहार करते हो। ये आपके जीवन के लिये परमेश्वर की इच्छा नहीं है।

चिन्ता न करना पहले तो कठिन होता है क्योंकि आप अपना स्वयं की देखभाल करने के आदि हो और कि आगे क्या करना है पर स्मरण करो कि आप जीने की नई राह सीख रहे हो।

लोग जिनके सम्बन्ध परमेश्वर के साथ नहीं हैं वे महसूस करेंगे, उन्हें चिन्ता होगी पर आपको नहीं। परमेश्वर आपकी ओर है और वह कहता है कि तुम अपनी चिन्ता उस पर डाल दो और वह तुम्हारी देखभाल करेगा (1 पतरस 5:7)।

उत्सुकता का मतलब है कि, आज का दिन हम आने वाले कल के लिये चिन्ता में बिता रहे हैं। यीशु ने ऐसा करने को मना किया है क्योंकि हर दिन का दुःख अपने में काफी है (मत्ती 6:34)। जब करने का समय आयेगा तो आप जानोगे कि क्या करना है पर शायद आप उस समय तक न जान पाओ। परमेश्वर चाहता है कि आप उस पर भरोसा करना सीखें। उसे कभी देर नहीं होती पर वह जल्दी भी नहीं करता। नये

विश्वासियों के लिये ये बाट जोहना कठिन है क्योंकि आप इसके आदि नहीं है। फिर भी, थोड़ी देर के बाद आप उससे प्रेम करने लगोगे। आपका मन शान्त होगा और आप प्रतिदिन बिना चिन्ता के रहने के लिये स्वतंत्र होंगे।

हर समय जब चिन्ता करने की परीक्षा हो—शैतान को स्मरण दिलाओ कि आप परमेश्वर की सन्तान हैं और उसने हमारी देखभाल करने का वादा किया है।

बुद्धि के नये हो जाने का रास्ता परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और उस पर मनन करने से प्राप्त होता है। ये वो मार्ग है जो सही और गलत सोच में फर्क करने को सीखना है। उदाहरण के लिये एक व्यक्ति सोचे कि उसे जीवन भर गरीब ही रहना है क्योंकि उसका परिवार हमेशा से गरीबी में रहा है—पर आप परमेश्वर के वचन में पाओगे कि ये सत्य नहीं है। परमेश्वर की सहायता से और अपनी आर्थिक जीवन में उसके सिद्धान्तों को लागू करने में आप गरीबी के चक्र को तोड़ सकते हैं और आवश्यकता से अधिक जीवन के हर क्षेत्र में पा सकते हो। परमेश्वर का वचन कहता है सबसे ऊपर वह चाहता है कि आप सम्पन्न हों और स्वस्थ रहें जैसा आपकी आत्मा तरक्की करती है (3 यूहन्ना 2)। जैसे ही आप अपनी आत्मा में परिपक्व होते हो और परमेश्वर की आज्ञाकारिता में चलते हो, वह आपको हर अच्छी चीज़ देगा कि आप उसे बुद्धिमानी से सही तरह से देख सकते हैं।

परमेश्वर आपकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा, और आपको भय में जीने की आवश्यकता नहीं। यदि आपको नौकरी चाहिये। आप प्रार्थना कर सकते हैं और वह आपकी सहायता नौकरी पाने में करेगा। वह आपको अनुग्रह देगा कि जो भी कार्य आप करे उसमें सफलता पाओ।

यीशु चाहता है कि आप एक अच्छा जीवन पायें, वह चाहता है कि आप जीवन का आनन्द लें—वह आपको जीवन देने के लिये मर गया। ज्ञान प्राप्त करो समझ प्राप्त करो, पहचानने की आत्मा रखो। बिना ज्ञान के लोग नाश हो जाते हैं तो इसके लिये पुकारो, मसीह यीशु परमेश्वर हमारी बुद्धि है (1 कुरिन्थियों 1:30)। उससे बुद्धि मांगें कि जिससे आपका मन आनन्दित हो जिससे आप उसके मार्ग पर चल सको "क्योंकि बुद्धि मूँगे से भी अच्छी है और सारी मनभावनी वस्तुओं में कोई भी उसके तुल्य नहीं है।" नीतिवचन 8:11

मेरी सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक, "मन युद्ध भूमि" मैं चाहती हूं कि आप इसे जितनी जल्दी सम्भव हो पढ़ें। याद रखें अपने सोच को नया करना युद्ध की नाईं लगे पर उसे छोड़ ना दें—वे जो परमेश्वर को बुद्धिमानी से खोजते हैं वे प्रतिफल पायेंगे।

अध्याय 6

बोलने का नया तरीका

शब्द शक्ति के पात्र हैं। वे या तो क्रियाशील या नष्ट करने वाली शक्ति रखते हैं। समय के आरम्भ से जब परमेश्वर बोला, उसने अच्छी चीज़ों की सृष्टि की और हमें उसके नमूने पर चलना है।

> मनुष्य का पेट मुँह की बातों के फल से भरता है; और बोलने से जो कुछ प्राप्त होता है उससे वह तृप्त होता है।
>
> जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।
>
> —नीतिवचन 18:20—21

इन पदों की सावधानी से अध्ययन हमें बताता है कि हमारे शब्दों का परिणाम होता है कुछ अच्छे वा कुछ बुरे परिणाम लाते हैं। जब हम बोलने के लिये अपने मुंह खोलते हैं तो हमें ये जानना/अहसास करना चाहिये कि शब्दों में शक्ति होता है। हमारे विचार हमारे शब्द बन जाता है, यहि एक मुख्य कारण है जो शैतान हमारे दिमागों में नकारात्मक विचारों को डालता है। वह जानता है कि यदि हम उन्हें अपने विचार करके लें तो स्वाभाविक है कि हम उन्हें बोलेंगे और वह उसे उसके गन्दे कार्यों को हमारे जीवनों में करने के लिये खुला द्वार दे देंगे।

जो अपने मुँह को वश में रखता है, वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है। —नीतिवचन 21:23

संसार की सबसे बड़ी परीक्षा ये है कि हम उसके विषय में बोलते जो हम देखते और महसूस करते हैं, पर परमेश्वर चाहते हैं कि हम उसके विषय में बात करें जो उसका वचन कहता है जो हम ले सकते हैं। मैं ये सुझाव नहीं दे रही कि आप अपनी परिस्थिति की अनदेखी करें पर मैं ये कह रही हूँ कि आप उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और आप अपनी समस्या के बीच क्या बोलते हैं उस पर बहुत कुछ निर्भर रहता है।

इस्राएलियों ने बयाबान में ग्यारह दिन की यात्रा पूरी करने के लिये चालीस वर्ष बिताये। वे घूमते ही घूमते रहे वही पहाड़ के चारों ओर और कोई तरक्की नहीं की। उसके पास बहुत समस्याएँ थीं और सबसे बड़ी थी शिकायत करना। वे कुड़कुड़ाये और हर समय चीज़ें जो उनके हिसाब से नहीं हुआ उसकी शिकायतें कीं। परमेश्वर हमसे चाहता कि हम उसकी स्तुति–प्रशंसा और धन्यवाद करें–उस समय जब हम जीवन के जंगल में हैं और पहाड़ की चोटी पर हैं। परेशानी के बीच हम क्या कहते वो निर्भर करता कि कितना लम्बा हम उसमें फंसे रहेंगे।

ये आपको अजीब सुनाई दे पर आपके शब्दों में शक्ति हैं रोमियों 4:17 कहता है, हम ऐसे परमेश्वर की सेवा करते हैं जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता हैं कि मानों वे हैं। परमेश्वर देखता है जो वह चाहता कि हो और उसके विषय में बात करें मानों वह पहले ही से हो चुकी है। ये करने के लिये आपको विश्वास की आंखों से देखना पड़ेगा। विश्वास महसूस करता जैसे वास्तविकता अभी जिसे देख नहीं सकती या स्वाभाविक रूप से महसूस कर सकती है। विश्वास परमेश्वर के वायदों को लेता है और इस प्रकार कार्य करता मानो वे सत्य थे।

यदि हमारे पास समस्या है और हम सत्य में विश्वास करते कि परमेश्वर हमें उससे निकालेगा तो हम प्रसन्न हो सकते हैं–हमें जब तक बदलाव न देख लें तब तक नहीं रूकना है क्योंकि ये हमारे पास विश्वास से है। हम अपने अन्दर जानते हैं कि परमेश्वर हमारे बदले में कार्य कर रहा है।

जब यहेजकेल भविष्यद्वक्ता ने अपने आस पास देखा तो उसने मृतक, सूखी हड्डियाँ देखीं और परमेश्वर ने उससे पूछा क्या वे फिर जीवित हो सकती हैं। यहेजकेल ने उत्तर दिया, "हे परमेश्वर! यहोवा, तू ही जानते हैं।" उसके उत्तर में परमेश्वर ने उससे भविष्यद्वाणी करने को कहा (बोलने को) कि इन हड्डियों से कह कि वे परमेश्वर का वचन सुनें। यहेजकेल भविष्यद्वाणी करने लगा जैसा उसको आज्ञा दी गई थीं और हड्डियाँ एक दूसरे से जुड़ने लगीं–उन पर नसें और मांस चढ़ने लगा और वे एक बड़ी सेना के रूप में अपने अपने पाँवों के बल खड़े हो गए; (यहेजकेल 37) परमेश्वर के वचन का शक्तिशाली उदाहरण।

परमेश्वर के वचन को ऊँची आवाज़ से बोलना

मैं लोगों को हर जगह सिखाती हूँ कि परमेश्वर के वचन को ऊँची आवाज से कहें, और अपने प्रतिदिन के आत्मिक अनुशासन में करें। ये एक महत्वपूर्ण चीज़ है जो परमेश्वर ने मुझे सिखाई और मैं कह सकती हूँ कि इसने मेरी बुद्धि को नया होने में सहायता की और मेरे जीवन को पलट दिया।

परमेश्वर का वचन आत्मा की तलवार है। ये सबसे महान हथियार है जो आप शैतान के विरूद्ध इस्तेमाल कर सकते हो। वह परमेश्वर के

वचन से डरता और कांपता है। हम लूका 4 में देखते हैं जब यीशु की परीक्षा शैतान द्वारा की गई। वह बयाबान में था। काफी लम्बे समय से उसने भोजन नहीं खाया था और शैतान उसके दिमाग में विचार डालने लगा। हर बार जब शैतान ने यीशु से झूठ बोला यीशु ने ये कहकर उत्तर दिया, "ये लिखा है" और धर्मशास्त्र के पद को जोर से कहाँ और शैतान के झूठ का नकार दिया। जब हम उसके पीछे चलने का उदाहरण लेते हैं तो हम विजय पथ पर है।

क्या आप जो कहते हैं उस पर ध्यान देने को राज़ी हैं? यदि आप हैं, तो आप और दूसरों की तरह पाओगे कि आप बहुत सी बातें कहते जो अपने जीवन में नहीं चाहते कि हो। मेरा मानना है कि हम अपनी शान्ति और आनन्द के स्तर को घटा–बढ़ा सकते हैं, अपने शब्दों के द्वारा। यदि मैं सही हूँ तो क्यों कुछ ना कहें जो आपको उदास हाने की अपेक्षा प्रसन्न करेगा।

विश्वास में कहना ये आपके नये जीवन का हिस्सा है तो अभी आरम्भ करें आप ये कह सकते हैं:

परमेश्वर मुझ से प्रेम करते और मेरे जीवन के लिये अच्छी योजना है।
मैं जहाँ भी जाता अपने पक्ष को पाता हूँ।
किसी भी काम में मैं हाथ डालता तो सम्पन्न और सफल होता हूँ।
परमेश्वर मेरे लिये सही द्वार खोलते हैं और गलत को बन्द करते हैं
मैं बुद्धि में चलता हूँ।
मैं शान्ति से भरा हुआ हूँ।
मैं आनन्दित हूँ।
मैं प्रेम में चलता हूँ।
आज मेरे साथ कुछ अच्छा होने वाला है।

मेरे सभी बच्चे परमेश्वर से प्रेम करते और उसकी सेवा करते हैं।
मेरा विवाहित जीवन दिन प्रतिदिन बेहतर होता जाता है।
मैं जहाँ कहीं जाती हूँ आशीष का कारण हूँ।

सूचि तो अन्तहीन हो सकती हैं—निश्चित करें कि आप जो कह रहे हैं वही हैं जो परमेश्वर का वचन कहता है। परमेश्वर के साथ सहमत होना पूरे नये संसार को खोल देगा। ये परमेश्वर की योजना को कार्य रूप देगा और शैतान इसे रोकने के लिये कुछ भी नहीं कर सकता।

अध्याय 7

अपने आप को देखने का नया तरीका

आप अपने आपको किस तरह से देखते हो? आपकी स्वयं का रूप ऐसा है जैसे आप अपने पर्स में अपने हृदय की फोटो लेकर चलते हैं। मैंने बहुत वर्षों की सेवकाई के द्वारा ये खोजा/पाया कि अधिकतर लोग अपने आप को पसन्द नहीं करते। मेरा अपने स्वयं से बहुत वर्षों तक बुरा सम्बन्ध था और ये मेरे जीवन में हर चीज़ में ज़हर घोल रहा था। परमेश्वर आप से प्रेम करता है और चाहता है कि आप अपने से प्रेम करें। स्वार्थ या स्वार्थ केन्द्रित तरीके से नहीं पर स्वस्थ तरीके से। जो आपके पास है नहीं वह आप दे नहीं सकते। परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और चाहता है कि वह प्रेम पहले हमें चंगा करें और तब दूसरे लोगों तक बहे। यदि आप उस प्रेम को जो परमेश्वर के पास आपके लिये है लेने से अस्वीकार करें—अपने आप को सही तरह से प्रेम न करने के द्वारा तो आप वास्तविकता में दूसरों से प्रेम कर ही नहीं सकते।

क्या आपका अपने प्रति राय क्या आपके कार्य पर निर्भर करता है? हम में से अधिकतर लोगों के लिये ऐसा ही है और हमारा मत अच्छा नहीं हो सकता क्योंकि हमारा कार्य लगातार अच्छा नहीं है। हम असिद्ध मनुष्य हैं और हम गलतियाँ करते हैं। हम सही चीज़ करना चाहते हैं पर

हमेशा गड़बड़ कर देते हैं। इसलिये हमें यीशु की आवश्यकता है। वह अपनी सामर्थ हमारी कमज़ोरियों में सिद्धता से दिखाता है।

परमेश्वर के लिये आप आश्चर्य नहीं हैं। वह जानता है कि आप क्या हैं जब उसने अपने सम्बन्ध में आपको निमंत्रित किया। वह पहले ही से जानता है कि हम जीवन में गलतियाँ करेंगे–वह हम से प्रेम करता और हमें चाहता है। अपने आप के लिये कठोर न हों। प्रतिदिन के आधार पर परमेश्वर की दया प्राप्त करना सीखो। हर दिन उठो और परमेश्वर की महिमा के लिये उत्तम से उत्तम करो। सर्वोत्तम करो क्योंकि आप परमेश्वर से प्रेम करते हो ये नहीं कि वह आपसे प्रेम करें। वह आपसे बहुत प्रेम करता और हमेशा करता रहेगा और उसका आपके प्रति प्रेम सिद्ध है। हर दिन के अन्त में परमेश्वर से कहें कि वह आपके सब पापों और गलतियों को क्षमा करें, रात की अच्छी नींद लो और दूसरे दिन ताज़ा होकर आरम्भ करें।

शैतान आपके विरोध में हैं, पर परमेश्वर आपके लिये है। आपको परमेश्वर की तरह होना चाहिये, क्योंकि जब दो सहमत होते हैं, वे शक्तिशाली बन जाते हैं। आप परमेश्वर की दृष्टि में कीमती हैं और आपके पास बहुत सी क्षमताएँ है जो परमेश्वर के लिये उपयुक्त होगी। आप जो सोचते गलत है तो उन चीज़ों की ओर न देखो ये भी न देखो कि आप को कितनी दूर जाना है–देखो कितनी दूर आ गये हो। अब आप मसीह यीशु में विश्वासी हैं और यही अद्‌भुत जीवन में सबकुछ का आरम्भ है।

धार्मिकता को समझना

धार्मिकता (परमेश्वर के साथ सही रहना) यीशु में विश्वास के द्वारा आती है अपने कामों के द्वारा नहीं। ये परमेश्वर का वरदान है और उस समय दी जाती है जब आप मसीह यीशु को उद्धारकर्ता ग्रहण करते हो।

धर्मशास्त्र के बहुत से पद हैं जो इसे सहारा देते हैं आपके प्रोत्साहन के लिये मैं कुछ एक की सूचि बनाती हूँ:

> जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।
>
> —2 कुरिन्थियों 5:21

वाह! कितना महान धर्मशास्त्र! मसीह पापरहित था, फिर भी उसका प्रेम हमारे लिये, उसने हमारे पापों को ले लिया जिससे कि हमारा परमेश्वर पिता के साथ महान सम्बन्ध हो जाये। परमेश्वर अब हमें स्वीकार करता और उसके साथ सही सम्बन्ध में इसलिये कि हमने मसीह यीशु को उद्धारकर्ता स्वीकार कर लिया है मुझे फिर कहना है, वाह!

भयभीत होने के बदले कि परमेश्वर अप्रसन्न है और क्रोधित है हम “मसीह में होकर” उसके सामने खड़े रह सकते हैं और जानें कि हमें स्वीकार किया गया है।

> क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है।
>
> —रोमियों 3:20

अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है क्योंकि कुछ भेद नहीं

—रोमियों 3:22

तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।

—गलातियों 2:16

आपके आध्यात्मिक विकास के लिये ये महत्वपूर्ण है कि आप अपने आपको देखो—मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा परमेश्वर के सामने सही सम्बन्ध के द्वारा। ये परमेश्वर का वरदान है। यदि हम हमेशा अपने आपके लिये बुरा महसूस करते हैं, आश्चर्य है यदि परमेश्वर हम से नाराज़ हो, हम शक्ति खो देते हैं जो परमेश्वर चाहता है कि हम उसमें चलें। यीशु में विश्वासी होकर हमारे पास शैतान के ऊपर अधिकार है, पर हमें धार्मिक का वस्त्र पहन कर परमेश्वर के सामने खड़ा होना है, दोष और दण्ड के चीथड़ों के साथ नहीं।

इफिसियों 6 वास्तव में कहता है कि हमें धार्मिकता की झिलम पहनना है। सैनिक के लिये झिलम उसके हृदय को ढाँपती है। आप अपने बारे में क्या विश्वास करते हो? क्या आप विश्वास के साथ कह सकते कि आपका सम्बन्ध परमेश्वर के साथ सही है? यदि आप अपनी आंखें उस पर लगायें जो यीशु में आपके लिये किया है उन गलतियों पर नहीं जो आपने की हैं। आप गलतियाँ करेंगे और जब करते हो शीघ्र

ही पश्चाताप कर परमेश्वर की क्षमा ले लो। यही एक तरीका है जिससे हम धार्मिकता में चल सकते हैं। ये हमारी धार्मिकता नहीं है कि हम अन्दर प्रवेश करते हैं हमारी धार्मिकता मैल–कुचैले चिथड़ों के समान है–पर हम मसीह यीशु पर विश्वास लाने से परमेश्वर की धार्मिकता में चल सकते हैं।

ये अद्‌भुत नया रवैया को अपने "नये जीवन" के भाग के रूप में ले सकते हो।

अपने आप का आनन्द लें

अब आप अपने आप का आनन्द लेने के लिये स्वतंत्र हैं और ये परमेश्वर की इच्छा है कि आप ऐसा करें। जो दूसरे कहते हैं अपनी योग्यता और मूल्य पर आधारित न हों। उस पर भी आधारित न हों कि लोगों ने आपके साथ कैसा व्यवहार किया है या जीवन की उपलब्धियों पर। परमेश्वर ने सोचा कि आप मूल्यवान हैं तो अपने पुत्र को आपके लिये मरने को भेज दिया और यही कारण आनन्द मनाने का है।

बाइबल हमें साफ साफ सिखाती है कि परमेश्वर चाहता है कि हम जीवन का आनन्द लें और ये सम्भव नहीं है यदि आप अपने आप आनन्द न करें। आप एक व्यक्ति हैं आप इससे अलग नहीं हो सकते, एक सेकेन्ड के लिये भी नहीं। यदि आप अपने में आनन्द न करें तो आप दयनीय जीवन में हैं।

मेरी तरह, आप दूसरे लोगों से भिन्न हैं जो आप जानते हो, पर ये ठीक है। ये वास्तव में कुछ है जो परमेश्वर ने अपने अभिप्राय में किया है। वह हमारी सृष्टि करता है थोड़ा भिन्न बनाता है। वह किस्मों को पसन्द करता है। आप भयानक नहीं है, आप अद्वितीय असली हैं और चीज़ों से अधिक मूल्य के हैं जो किसी न किसी चीज़ की कॉपी हैं।

दूसरों से अपने आपकी तुलना न करें और उनकी तुलना में अपना जीवन न बितायें (2 कुरिन्थियों 10:12)। आप अपने आप में बने रहो और आनन्द करो जो आप हो। आपको उन क्षेत्रों में बदलना है—हमारी तरह और पवित्र आत्मा आपके जीवन भर उन बदलाव को आपमें लाने के लिये व्यस्त रहेगा। शुभ समाचार ये है कि आप अपने में आनन्द करने के लिये स्वतंत्र हो जब कि कार्य जोरों पर चल रहा है।

अध्याय 8

भय को विश्वास में बदलना

हम सब जानते हैं कि भय कैसा महसूस होता है। ये पीड़ादायक है और रोकता है। भय हमें हिला सकता है, पसीना ला सकता, कमजोर महसूस करा सकता और जिन चीज़ों का सामना करते—हमें भगा सकता है।

भय परमेश्वर की ओर से नहीं है। ये शैतान का हथियार है जो हमें अच्छा जीवन जो परमेश्वर देना चाहता है उसे जीने से हमें रोकता है (2 तीमुथियुस 1:7)। परमेश्वर चाहता है कि हम विश्वास में जियें। विश्वास हमारे पूरे व्यक्तित्व को परमेश्वर पर पूरे भरोसे के साथ झुकना है, उसकी शक्ति, बुद्धि और भलाई में। ये उन चीज़ों का सबूत है जो हम देखते नहीं और उनकी वास्तविकता की पुष्टि है।

विश्वास आत्मिक राज्य में कार्य करता है, आप शायद इसके आदि हैं कि जो दिखता है उसी पर विश्वास करें पर परमेश्वर की सन्तान होकर आपको राज्य में सुखदायक जीने की आवश्यकता होगी जो आप देख नहीं सकते (आत्मिक राज्य) हम परमेश्वर को नहीं देखते क्योंकि वह आत्मा है पर हम उस पर दृढ़ता से विश्वास करते हैं, हम साधारणतः स्वर्गदूतों को नहीं देखते, पर परमेश्वर का वचन कहता है वे हमारे चारों ओर हमें बचाने के लिये हैं। अपना विश्वास परमेश्वर के वचन पर दिखा

कर क्या हम आत्मिक राज्य में पहुँच सकते हैं और उन चीज़ों को खींच लें जिनमें परमेश्वर हमें चाहता है कि आनन्द करें पर अभी तक वास्तविक नहीं हैं।

शैतान हमारा ध्यान परिस्थितियों में खींचकर बहुत प्रसन्न होता है और हमें भविष्य के विषय में डराता भी दूसरी ओर परमेश्वर चाहता है कि हम उस पर भरोसा करें, विश्वास करें कि वह किसी भी परिस्थिति से महान है या शैतान की धमकियों से।

बाइबल महान स्त्री और पुरुषों के उदाहरण से भरपूर है जिन्होंने अपने आप को भयंकर परिस्थितियों में पाया और परिणाम था कि भय से उनके हृदय भर गये थे। पर उन्होंने अपना विश्वास परमेश्वर पर रखने का निर्णय लिया और उन्होंने महिमामय छुटकारे का अनुभव पाया। आपको निर्णय करना चाहिये कि यदि आप भय में जीने जा रहे हैं या विश्वास में। भले ही आप अभी मसीही हों आप अभी भी अपना जीवन हर प्रकार के भय की पीड़ा के साथ जी सकते हैं–जब तक कि आप विश्वास में जीने का निर्णय न करें। आपने विश्वास से यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया, अगला कदम है विश्वास से जीना सीखना।

> क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है, जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।"
>
> —रोमियों 1:17

जैसा हम परमेश्वर के प्रेम को समझते हैं और अहसास करते हैं कि हम परमेश्वर के साथ सही किये गये हैं मसीह यीशु की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के द्वारा, हम विश्वास में चलना आसान पाते हैं। हमने

परमेश्वर पर विश्वास करना आरम्भ किया कि वह हमारी देखभाल करेगा—ये नहीं कि अपने आप से हम करें।

साहस भय की अनुपस्थिति नहीं है पर ये परमेश्वर की उपस्थिति में कार्य करता है। जब परमेश्वर ने अपने सेवकों को बताया कि वे न डरें। वह उन्हें ये आज्ञा नहीं दे रहा कि भय महसूस ना करें पर वह ये बता रहा है कि वे उसके प्रति आज्ञाकारी बनें भले ही वे कुछ भी महसूस करते हों। परमेश्वर जानता है कि भय की आत्मा हमेशा हमें उसके साथ चलने में रोकने का प्रयास करेगा। इसीलिये वह हमें बार बार अपने वचन में बताता है कि वह हर समय हमारे साथ है। और उसके कारण हमें भय के आगे नहीं झुकना है।

इलेनोर रूज़वेल्ट ने कहा, "आप हर अनुभव में जिसमें आप वास्तव में चेहरे पर भय को देखना रोकते हैं, आप सामर्थ, साहस और भरोसा पाते हो। आपको वो काम करना चाहिये जो आप सोचते है कि नहीं कर सकते हो।"

> तू हियाव बाँध और दृढ़ हो, उनसे न डर और न भयभीत हो; क्योंकि तेरे संग चलनेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा है; वह तुझ को धोखा न देगा और न छोड़ेगा।
>
> —व्यवस्थाविवरण 31:6

केवल विश्वास ही परमेश्वर को प्रसन्न करता है। हम विश्वास के द्वारा परमेश्वर से पाते हैं, इसलिये ये नये विश्वासियों के लिये अत्याधिक महत्वपूर्ण हैं कि विश्वास करना सीखें और उसमें चलना आरम्भ करें। मज़बूत विश्वास का विकसित होना ऐसा है जैसे मज़बूत मांस पेशियों

का विकास होता है। आप अपने विश्वास का अभ्यास थोड़ा थोड़ा करके करते हो और हर बार जब करते वह मज़बूत होता जाता है।

मत्ती 17:20 हमें सिखाता है, जो विश्वास करता है उसके लिये सब कुछ सम्भव है। यहाँ तक कि थोड़ा सा विश्वास हमारे जीवनों को परेशानियों के पहाड़ों को हटा सकता है। आपने शायद अपना जीवन समस्याओं को सुलझाने में ही बिता दिया है और अक्सर निराश और बेचैन महसूस करते हो। यदि ऐसा है तो आप एक नये अनुभव के किनारे हैं। अभी आप परमेश्वर से बातें (प्रार्थना) कर सकते हैं और आप की हर बात में शामिल होने के लिये निमंत्रित कर सकते हैं और आप पाओगे कि जो मनुष्य के लिये असम्भव है वह परमेश्वर के लिये सम्भव है।

आपके विश्वास के अनुसार ही आपके लिये होगा (मत्ती 9:29) आप शायद अपने जीवन के अधिकतर समय भय में जिये हों पर अभी समय है कि उस भय को परमेश्वर के विश्वास में बदलने का समय है। नये तरीकों को सीखने में समय लगेगा पर निरूत्साह न हों ना छोड़ दें। इस धरती पर हर चीज़ धीमी बाढ़ के नियम के अनुसार कार्य करती है। धीरे धीरे सब चीज़ें बदल जाती हैं यदि हम वो करते रहें जो परमेश्वर हमें करने को कहता है।

अध्याय 9

जीवन का आनन्द लें

> चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है, मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।
>
> —यूहन्ना 10:10

यीशु मर गया कि आप जीवन का आनन्द ले सको। इसका मतलब ये नहीं कि जैसा आप चाहते आपको सब कुछ मिल जायेगा और कभी परेशानियां नहीं होंगी। इसका अर्थ है आपके परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के द्वारा आप इन दयनीय परिस्थिति से ऊपर उठ सकते हैं और पुनरूत्थित जीवन परमेश्वर के लिये बांट सकते हैं—ये सब पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा कर सकते हैं।

परमेश्वर हमारा असली जीवन है। हम उसमें जीते हैं, चलते हैं और अपने को पाते हैं। परमेश्वर का आनन्द लेना सीखना आपको छोड़ेगा कि आप परमेश्वर उन सब चीज़ों में रूचि लेता है जिसका सम्बन्ध आपसे है। वह हर समय आपके जीवन में कार्य कर रहा है, बाइबल भी वास्तव में ये कहती है कि जो आपकी सम्बन्ध की चीज़ है परमेश्वर उसे सिद्ध करेगा—और आपको अपनी इच्छा में और अधिक पूरी रीति से लायेगा।

गलत तरीके में परमेश्वर से भयभीत न हों–हमें आदरपूर्ण परमेश्वर का भय होना चाहिये जिसका अर्थ है हमें उसका सम्मान करना चाहिये और जानना चाहिये कि वह सर्वशक्तिमान है और जो कहता वह करता है। पर हमें कभी डरना नहीं चाहिये कि हर बार जब हम गलती करते तो परमेश्वर नाराज़ होता है और हर बार जब असफल होते तो वह हमें सजा देगा। वह धीरज धरने वाला है और वह जानता है कि हमारी बनावट/ढांचा क्या है और हमारी कमजोरी और गलतियों को समझता है।

यदि हम बाकी लोगों की तरह हो, आपके जीवन में बहुत सी चीज़ें हैं और व्यक्तित्व में जिन्हें बदलने की आवश्यकता है–और परमेश्वर उन्हें बदल देगा। पर शुभः सन्देश ये है कि आप परमेश्वर वा अपने जीवन का आनन्द ले सकते हो जब वह ये सब कर रहा है।

अभी जो जीवन आपका है वह नहीं है जिसमे आप अन्त करना चाहते हैं पर वर्तमान समय में यही अकेला है, इसलिए आपको आनन्द करने की आवश्यकता है उसमें अच्छी चीज़ें ढूँढ़ें। सकारात्मक को चिन्हित करें और हर चीज़ में अच्छा देखना सीखें। अपने मित्रों और परिवारों का आनन्द लें। उनसे अलग न हों और उन्हें बदलने में व्यस्त न रहें। उनके लिये प्रार्थना करें और परमेश्वर को उन्हें बदलने दें।

अपने कार्य का आनन्द लें, घर का और साधारण चीज़ों का प्रतिदिन के जीवन का आनन्द लें। यदि आप परमेश्वर पर विश्वास करोगे तो ये सम्भव है और यदि अपना अच्छा व्यवहार करेंगे। अपनी आँखें परमेश्वर पर लगाओ पर उन पर नहीं जो सब चीज़ जो आपके साथ गलत है, आपका जीवन, आपका परिवार, और संसार। परमेश्वर के पास आपके लिये अच्छी योजना है और उसने पहले ही से कार्य करना आरम्भ कर

दिया है। समय से पहले आप आनन्द कर सकते हैं, अच्छी चीज़ें आने का इन्तज़ार है।

बहुत से लोग इस प्रकार जीते हैं जहाँ वे विश्वास करते हैं कि यदि उनके पास किसी प्रकार की समस्या है तो वे अपने जीवन का आनन्द नहीं ले सकते, पर ये गलत सोच है। गलतियों पर न रहें या अपने पूर्वकाल के प्रति अफ़सोस करें। लगातार आप प्रभु यीशु में जो नया जीवन है उसके भविष्य के बारे में सोचते रहें। आप जो भी निश्चय करें आप जीवन का आनन्द ले सकेंगे। यदि आप ये स्मरण रखें कि मैं आपको जीने की नई राह के बारे में सिखा रही हूँ तो आप यदि किसी सड़क जाम में फंस जायें तो वहाँ बैठे बैठे आनन्द कर सकते हैं, आपका रवैया जीवन के प्रति एक बड़ा भाग है।

अन्त में मैंने आनन्द करना सीख लिया कि मैं कहाँ पर हूँ, कहाँ जा रही हूँ और मैं आपसे भी यही बड़े ज़ोर से आग्रह करती हूँ कि ऐसा ही करें। परमेश्वर के लिये आपके जीवन में करने को बहुत कुछ है और वह नहीं चाहता कि आप दयनीय हों उस समय जब वह यह कर रहा हो। जैसा बच्चों को व्यस्क बनने के लिये बढ़ना है, तो मसीहियों को भी बढ़ना है। ये प्रक्रिया है जो अक्सर हमारी इच्छा की अपेक्षा अधिक समय लेती है, पर ऐसी कोई बात नहीं कि अपनी यात्रा का आनन्द न लें।

परमेश्वर आप से ये उम्मीद नहीं करता कि आप आज ही सिद्ध हो जाओ वास्तव में वह पहले ही से जानता है कि आप कभी भी सिद्ध नहीं हो सकते हैं। विशेष कर जब तक आप इस धरती पर रहते हो। फिर भी वह हम सब से आशा करता है कि लगातार प्रयास करते रहें। हम प्रतिदिन उठते और अपनी भरसक कोशिश परमेश्वर की सेवा करने की करते हैं। हमें अपनी असफलताओं को स्वीकार करना चाहिये और अपने

पापों की क्षमा मांगना चाहिये और उनसे पलटने की इच्छा रखना चाहिये। यदि हम ऐसा करेंगे तो बाकी परमेश्वर करेगा। वह पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे साथ कार्य करता रहेगा। वह हमें सिखायेगा, हमें बदलेगा और हमें इस्तेमाल करेगा। आपने जीवन की नई राह में कदम रख लिया है और मेरा मानना है कि आपको कभी अफसोस नहीं होगा। परमेश्वर का आनन्द लें, अपने आप में आनन्द लें और जिस जीवन को देने के लिये यीशु मर गया उसका आनन्द लें!

उद्धार की प्रार्थना

पिता परमेश्वर, मैं आप से प्रेम करता हूँ, आज मैं आपके पास विश्वास से आता हूँ, आप से अपने पापों की क्षमा मांगता हूँ। यीशु, मैं आप पर विश्वास करता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि आप क्रूस पर मेरे लिये मर गये, आपने अपना निर्दोष लहू मेरे लिये बहाया। आपने मेरा स्थान ले लिया और उन सब दण्डों को ले लिया जिनका मैं हकदार था। मैं विश्वास करता हूँ कि आप मर गये, गाड़े गये और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठें। मृत्यु आपको रोक नहीं सकी। आपने शैतान को परास्त किया और नरक की कुंजियाँ लीं और मृत्यु को दूर किया। मैं विश्वास करता हूँ कि ये सब आपने मेरे लिये किया क्योंकि आप मुझ से प्रेम करते हैं। मैं एक मसीही होना चाहता हूँ, मैं अपने जीवन के सब दिनों में आपकी सेवा करना चाहता हूँ। मैं ये सीखना चाहता हूँ कि किस प्रकार इस नये जीवन में जीना है जिसे आपने वायदा किया है, अभी मैं यीशु, आपको स्वीकार करना चाहता हूँ और अपने आप को आपको दे देता हूँ। मैं जैसा हूँ मुझे ले लीजिये और जो आप मुझे बनाना चाहते हैं बनायें।

धन्यवाद यीशु, मेरा उद्धार करने के लिये। मुझे अपने पवित्र आत्मा से भरपूर कीजिये और हर चीज़ जो मुझे जानना है सिखायें। अब मैं विश्वास करता हूँ कि मेरा उद्धार हो गया है, मेरा नया जन्म हो गया है और जब मैं मरूँगा तो स्वर्ग को जाऊँगा। पिता, परमेश्वर, मैं अपनी यात्रा का आनन्द लूँगा और आपकी महिमा के लिये जीऊँगा।

परामर्श के साधन

मेरे पास बहुत से साधन उपलब्ध हैं जो आपको सीखने में सहायता करेंगे और आपके नये जीवन में बढ़ेंगे। आप साधन के कैटालॉग की मांग कर सकते हैं और एक आपको मुफ्त भेजा जायेगा। मैं ये भी सिफारिश करती हूँ कि आप हमारी मासिक पत्रिका की मांग करें जो आपको कई महीनों तक मुफ्त भेजी जायेगी।

मैं अपनी पुस्तक, "मान कि युद्ध भूमि" के लिये सिफारिश करती हूँ साथ ही "हौ टू सक्सीड़ एट बियिंग युवर् सेल्फ," मैं "दि वॉर्ड, दि नेम्, दि ब्लड" की भी सिफारिश करूँगी। यह पुस्तक जो आपके जीवन में एक नींव डालने में सहायता करेगा जो उस सम्बन्ध में है कि यीशु ने क्रूस पर आपके लिये जो किया और शक्ति जो उपलब्ध में है कि यीुश ने क्रूस पर आपके लिये जो किया और शक्ति जो उपलब्ध आपके विश्वासी होने के लिये है।

"प्रेसिंग इन एन्ड प्रेसिंग ऑन" एक अच्छी शिक्षण श्रृंखला है जो कैसेट या सी.डी. के रूप में उपलब्ध है और "दि माउथ" एक श्रृंखला है जो आपको आपके शब्दों की शक्ति के विषय सीखने में सहायता करेगी।

यदि हम किसी भी तरह से सहायता कर सकते हैं तो अवश्य ही हमारे दफ्तर पर फोन करें और याद रखें, परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और हम भी आप से प्रेम करते हैं!

लेखिका के बारे में

जॉयस मेयर दुनिया के प्रमुख व्यावहारिक बाइबल शिक्षकों में से एक है। न्यूयॉर्क टाइम्स की यह प्रसिद्ध लेखिका होने के कारण यीशु मसीह के माध्यम से आशा और बहाली पाने में उनकी पुस्तकों ने लाखों लोगों की मदद की है। जॉयस मेयर मिनिस्ट्रीज़ के माध्यम से, वह मन, मुंह, मूड और व्यवहार पर विशेष ध्यान देने के साथ कई विषयों पर शिक्षा देती है। उनकी खरी संचार शैली उन्हे स्वयं के अनुभवों को खेलकर और व्यवहारिक रूप से साझा करने देता है ताकि दूसरे जो कुछ उन्होने सीखा है दूसरे उसे अपने जीवन में लागू कर सकें। जॉयस ने लगभग 100 पुस्तके लिखीं है जिनका 100 भाषाओं में अनुवाद किया गया है। वह हर साल एक दर्जन से अधिक घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करती है और लोगों को अपने प्रतिदिन के जीवन का आनंद उठाना सिखाती हैं। पिछले 30 वर्षों में उनकी वार्षिक महिला सम्मेलन ने दुनिया भर से 200,000 से अधिक महिलाओं को आकर्षित किया है। जॉयस की दुखी लोगों की दर्द करने का मजुनू आशा के हाथ का आधार है जो कि जॉयस मेयर मिनिस्ट्रीज़ का अंग है जो उनके गृहनगर सेंट लुइस सहित दुनिया भर में प्रचार कार्यक्रमों में सहायता देती है।

Joyce Meyer Ministries—India
Post Bag No. 1
Jubilee Hills, Hyderabad
India
www.jmmindia.org

Go to tv.joycemeyer.org to watch Joyce's messages in a variety of different languages.

You can also request Prayer on Toll Free number: 1800 3454 007

कृपया अपनी गवाही इसमें शामिल करें या इस पुस्तक से जो सहायता प्राप्त हुई।

जब आप लिखें–आपकी प्रार्थना विनतियों का स्वागत है।

क्या आप कभी अचम्भा करते है. . .

मैं क्यों यहाँ पर हूँ? जीवन में मेरा उद्देश्य क्या है? क्या यहाँ पर एक परमेश्वर है? यहाँ पर अवश्य इससे कुछ ज्यादा यहाँ होना है!

हम सबके पास हमारे जीवनों में कभी—कभी कुछ इस तरह के विचार और प्रश्न होते है। और जब तक हमें उत्तर नहीं मिलते, हम मन की शांति, और जीवन में असल, अनन्त आनन्द और संतुष्टी को पाने के लिए संघर्ष करते रहेंगे।

जॉयस की नई पुस्तक ऐ न्यु वे आफ लीविंग में, आप आपके मन में बोझ बन रहे प्रश्नों का उत्तर पा सकते है। यह सब परमेश्वर के बारे सच्चाई और कितना वह आपसे प्रेम करता को सीखने के साथ आरम्भ कर सकते है!

जब आप इसे पढ़ेंगे आप सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण फैसले जो आप कभी आपके जीवन में करेंगे को खोजेंगे, क्यों आपको परमेश्वर चाहिए, और क्यों प्रत्येक समस्या जिसका हम सामना करेंगे का वह हल है! आप सचमुच उस जीवन को व्यतीत कर सकते जिसका अनुभव करने और आनन्द लेने के लिए आप बुलाए गए है!

सच्चाई यह है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और उसके पास आपके जीवन के लिए एक अद्‌भुद योजना है। सब कुछ जिसकी आप लालसा रखते और जो आपको कभी आवश्यक होगा वह उसके साथ एक व्यक्तिगत संबंध के द्वारा है। यह जीवन के नए ढंग को जिसको व्यतीत करने के लिए आप सचमुच खोज कर रहे है को अनुभव करने का भेद है!

JOYCE MEYER MINISTRIES®
Sharing Christ – Loving People

Post Bag No. 1, Jubilee Hills,
Hyderabad - 500 033